UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 112-115

"पूर्व प्राथमिक शिक्षा की उपादेयता"

डॉ. अशोक खरे
(वरिष्ठ व्याख्याता)
शास. स्नातको. शिक्षक शिक्षा महा., उज्जैन (म.प्र.)

सारांश :–
*व्यक्ति के विकास की प्रारम्भिक अंकुरावस्था है 'शैशवावस्था'। **जैसेल** के अनुसार "प्रथम छः वर्ष में बालक बाद के बारह वर्षों से दुगना सीख जाता है।" अर्थात् शिशु जीवन मानव जीवन की नींव है। वर्तमान दौर में प्रचुर–भौतिक संसाधनों के कारण बालक के सीखने की प्रवृत्तियों व स्थितियों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुये है। पूर्व की अपेक्षा आज का बालक अपने आस पास सीखने के अनेक उपागम (Approach) पाता है, और तेजी से सीख रहा हैं। फलतः वह कम आयु (अनुमानतः 03 वर्ष) में औपचारिक अधिगम (Formal Learning) के लिये तैयार भी हो जाता है। प्रभावतः एक ऐसी अनौपचारिक शिक्षण व्यवस्था की आवश्यकता प्रतीत होती हैं जो 03–05 वर्ष के बच्चों में विशिष्ट उद्देश्य–शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक विकास व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके साथ ही शिक्षा के अगले स्तर औपचारिक शिक्षा के लिये नींव का कार्य कर सके।*

प्रस्तावना :–
व्यक्ति के विकास की प्रारम्भिक अंकुरावस्था है 'शैशवावस्था'। **जैसेल** के अनुसार "प्रथम छः वर्ष में बालक बाद के बारह वर्षों से दुगना सीख जाता है।" अर्थात् शिशु जीवन मानव जीवन की नींव है।

वर्तमान दौर में प्रचुर–भौतिक संसाधनों के कारण बालक के सीखने की प्रवृत्तियों व स्थितियों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुये है। पूर्व की अपेक्षा आज का बालक अपने आस पास सीखने के अनेक उपागम (Approach) पाता है, और तेजी से सीख रहा हैं। फलतः वह कम आयु (अनुमानतः 03 वर्ष) में औपचारिक अधिगम (Formal Learning) के लिये तैयार भी हो जाता है। प्रभावतः एक ऐसी अनौपचारिक शिक्षण व्यवस्था की आवश्यकता प्रतीत होती हैं जो 03–05 वर्ष के बच्चों में विशिष्ट उद्देश्य–शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक विकास व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके साथ ही शिक्षा के अगले स्तर औपचारिक शिक्षा के लिये नींव का कार्य कर सके।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा
विश्व पटल पर पूर्व प्राथमिक शिक्षा की चेतना के जनक **ईसान कमेनियस** (1599–1670) के अनुसार पूर्व प्राथमिक शाला को माता की गोद या मदर स्कूल कहा है। संकुचित अर्थों में 03 से 06 वर्ष की आयु के बालकों को जो शिक्षा नर्सरी, किण्डर गार्टेन, माण्टसेरी, पूर्व बेसिक विद्यालय, बाल शिक्षण केन्द्र में दी जाती है वह पूर्व प्राथमिक शिक्षा है। व्यापाक अर्थों में औपचारिक विद्यालयीन शिक्षा के पूर्व दी जाने वाली शिक्षा ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा है।

निष्कर्षतः शैशवावस्था में अनौपचारिक रूप से स्वस्थ, संस्कारयुक्त एवं परिष्कृत वातावरण में दिये जाने वाला व्यवहारिक ज्ञान ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 112-115

पूर्व प्राथमिक शिक्षा विचार का उद्भव एवं विकास

भारतीय शिक्षा के इतिहास में न केवल वैदिककाल, उत्तर वैदिककाल, वरन मध्यकालीन हिन्दू व मुस्लिम शिक्षा पद्धतियों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कल्पना का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है। पाश्चात्य शिक्षा के इतिहास में भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा का विचार आधुनिक यूरोपीय शिक्षा इतिहास में है तथा प्राचीन यूनानी व रोमी शिक्षा सुधारकों **प्लेटो, क्विन्टीलियन** द्वारा आरम्भिक शैशवावस्था में शिशु शिक्षा दिये जाने का उल्लेख प्राप्त है।

शिशु शिक्षा की विचारधारा के व्यवहारिक रूप का स्पष्ट उल्लेख 1802 विचार में इंगलैण्ड के **"रार्वटओवन"** की शिशु शाला के रूप में प्राप्त है। जो एक मिल मालिक थे। जिनके द्वारा उनकी फैक्ट्री में कामगारों के बच्चों की देखरेख की व्यवस्था के दृष्टिकोण से इन शिशु केन्द्रों की स्थापना की गयी थी जिनकी उम्र 06 वर्ष से कम हो।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के जनक के रूप में जर्मनी शिक्षाशास्त्री **फ्राबेल** का नाम उल्लेखनीय हैं जिनके द्वारा 1836–37 में जर्मनी के **'ब्लेकन बर्ग'** ग्राम में (Kindergarten) **किण्डर गार्टेन** (बालोद्यान) नाम से पूर्व प्राथमिक केन्द्र की स्थापना की गयी। फ्राबोलपश्चात **जान डी.वी.** ने भी किण्डर गार्टेन पद्धति आधारित शिशु शिक्षा केन्द्र संचालित किये।

20 वीं शताब्दी के आरम्भ 1906 में **डॉ. मारिया माण्टेसरी** ने इटली में 2–6 वर्ष की आयु के बच्चों की शिक्षा हेतु **'बालघर'** आरम्भ कर शिशु शिक्षा के महत्व व स्वरूप को सम्पूर्ण संसार में नवीन आयाम व दिशा प्रदान की।

भारत में पूर्व प्राथमिक शिक्षा

16 जनवरी 1917 को मुम्बई में सर्वप्रथम बाल शिक्षा समिति की स्थापना पश्चात् 1920 में सौराष्ट्र के (काठियावाड़ा) अंचलों में गीजूभाई बधेका द्वारा बाल शिक्षा संघ स्थापित किया गया। 1937 में भारतीय राष्ट्रीय क्रांग्रेस के अधिवेशन में डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में गठित **बुनियादी शिक्षा समिति** में पूर्व प्राथमिक शिक्षा अनुभव की गई।

1940–48 तक भारतीय प्रवास पर रही **मॉरिया माण्टेसरी** के प्रत्यक्ष प्रभाव पूर्व प्राथमिक पर दृष्टिगोचर होते है। इसी दौरान गाँधीजी ने पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कल्पना को मूर्तरूप दिया। पश्चात् –

- 1952–53 माध्यमिक शिक्षा आयोग
- 1964–66 कोठारी आयोग
- 1972 डॉ. स्वामीनाथन आयोग
- 1986 एवं 1992 राष्ट्रीय शिक्षा नीति
- 1993 यशपाल समिति एवं RTE – शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 द्वारा पूर्व प्राथमिक शिक्षा दिये जाने पर पृथक–पृथक अनुशंसाये देकर उसके महत्व व उपादेयता को स्पष्ट किया गया है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में मेरे निर्देशन में एम.एड. स्तर पर सम्पन्न शोधकार्य निम्नानुसार है

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 112-115

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की उपादेयता
(उज्जैन व रतलाम जिले के प्राथमिक विद्यालयों के सन्दर्भ में)

न्यादर्श –

उज्जैन			रतलाम		
अभिभावक	शिक्षक		अभिभावक	शिक्षक	
	शासकीय	अशासकीय		शासकीय	अशासकीय
50	25	25	50	25	25

अध्ययन के उद्देश्य –

1. प्राथमिक (शासकीय/अशासकीय) में नामांकित छात्रों की स्थिति को जानना।
2. प्राथमिक विद्यालय में दर्ज छात्रों की उपस्थित व ठहराव को जानना।
3. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का आकलन करना।
4. पालकों और शिक्षकों का पूर्व प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को जानना।

परिकल्पना –

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा से प्राथमिक विद्यालयों के नामांकन में वृद्धि की स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा से प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की उपस्थिति और ठहराव में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. पूर्व प्राथमिक शिक्षा से प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. पूर्व प्राथमिक शिक्षा के प्रति पालकों और शिक्षकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध के निष्कर्ष –

1. सर्वेक्षित शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की नामांकित संख्या अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में कम है। जो शासन की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद विपरीत प्रभाव दर्शाती है।
2. शासकीय विद्यालयों के आसपास पूर्व प्राथमिक शालाएँ उपलब्ध नहीं है, जबकि अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाओं के साथ पूर्व प्राथमिक कक्षाएँ भी संचालित है। परिणाम स्वरूप अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक शालाओं से कक्षा 01 में दर्ज विद्यार्थियों का प्रतिशत शासकीय विद्यालयों की तुलना में 88% अधिक है।
3. सर्वेक्षित शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शत प्रतिशत शिक्षकों के दृष्टिकोण में पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्राथमिक शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव होता है जिससे विद्यार्थियों की शाला में नियमित उपस्थिति रहती है व (ठहराव) पूरे समय तक शाला में रूक रहते हैं जबकि बिना पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों की शाला में नियमित उपस्थिति व ठहराव का प्रतिशत अपेक्षाकृत 72% कम है।
4. पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी प्राथमिक स्तर पर तीव्र गति से सीखते हैं व अध्ययन के प्रति रुचि होती है जिसमें उनका उपलब्धि स्तर शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में अपेक्षाकृत 78% ज्यादा परिलक्षित होता है।
5. शत प्रतिशत शिक्षक और अभिभावकों को मत है कि शासकीय व अशासकीय दोनों ही प्रकार के प्राथमिक विद्यालयों के साथ पूर्व प्राथमिक शालाएँ सम्बद्ध होनी चाहिये।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 112-115

6. शासकीय अशासकीय दोनों ही प्रकार की पूर्व प्राथमिक शालाओं के कार्यरत कर्मचारी पूर्ण विशिष्ट प्रशिक्षित हो।

परिणाम –

निष्कर्षतः पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा स्तर के नामांकन में वृद्धि हेतु सहायक है। इससे प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, नियमित उपस्थिति एवं ठहराव में वृद्धि तथा परिणामतः छात्र उपलब्धि स्तर पूर्व से बेहतर होता है। साथ ही बालक शारीरिक व मानसिक रूप से 6 वर्ष का होने तक शाला में मनोयोग से जाने का तत्पर रहता है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विचारों का सिहावलोकन से वर्तमान स्थितियों का अवलोकन करने पर शोधोपरान्त यह तथ्य स्पष्ट होते है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कमियों को सुधार कर उनकी उपादेयता और विस्तृत की जा सकती है ना कि बोझ रूप में स्वीकारी जाए।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल जे.सी.,1997 : पूर्व प्राथमिक शिक्षा का इतिहास एवं दर्शन, दोआब हाउस, नई दिल्ली
2. भावे, कमला, 1983 : पूर्व प्राथमिक शिक्षण सिद्धान्त एवं कार्य प्रणाली, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (म.प्र.)
3. पाठक, पी.डी.,1988 : भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
4. श्रीवास्तव, के.एम., 2005 : शैशवकालीन शिक्षा सिद्धान्त, स्वरूप एवं शिक्षण, आफसेट रीवा
5. शाला पूर्व शिक्षा संदर्शिका : राज्य शिक्षा केन्द्र म.प्र. शासन, भोपाल
6. आंगनवाड़ीकार्यकर्त्ता हैण्ड बुक : राष्ट्रीय जनसहयोग एवं बाल विकास संस्थान